बाल मधुमेही की शादी

◄ डॉ. नरेन्द्रनाथ लाहा

(मंच पर वृद्ध सज्जन चिंतित अवस्था में बैठे हैं। दूसरी ओर से वृद्धा का प्रवेश)।

वृद्धा : क्या बात है? इतने परेशान क्यों हो?

वृद्ध : बुढ़ापा यूँ ही परेशानी का कारण होता है। जिस पर यदि सिर पर शादी लायक लड़की का बोझ हो तो फिर परेशानी और भी बढ़ जाती है।

वृद्धा : हाँ, चिन्ता का विषय तो है ही। मीना की शादी बहुत बड़ी समस्या हो गई है।

वृद्ध (तनिक आवेश में) : गुस्सा तो इस बात पर आता है कि लड़की अच्छी है, शक्ल–सूरत भी अच्छी है, अच्छी पढ़ी–लिखी है, फिर भी लड़के वाले शादी से इंकार कर रहे हैं।

वृद्धा (दुःखी स्वर में) : मेरे तो समझ में नहीं आता कि इन्कार क्यों कर रहे हैं? हम तो अच्छा देने के हक में हैं। माना की दहेज बुरी चीज है, पर लड़की को पार करने का और कोई तरीका समझ में नहीं आता है।

वृद्ध : दहेज की कोई बात नहीं है। लड़के वालों का कहना है कि लड़की को पेशाब में शक्कर जाने की बीमारी है।

वृद्धा : लो, यह कौन–सी नई बात हुई? हम तो शुरू से ही जानते हैं कि मीना को यह बीमारी है।

वृद्ध : अब इसमें लड़की का क्या दोष? वह तो बचपन से ही इस बीमारी से ग्रसित है।

वृद्धा : वह बार–बर पेशाब जाती है। भूख बहुत लगती थी, खाती भी खूब थी, पर उसका वज़न घटता ही रहता था। डॉक्टर कह रहा था कि उसे डायबिटीज का रोग है। जीवन में कभी भी ठीक नहीं होगी और उसे जीवन भर इंसुलिन के इंजेक्शन लगते रहेंगे।

वृद्ध : पर उम्मीद तो है। इंसुलिन का इंजेक्शन लगाते रहने से उसकी शकर कंट्रोल में रहेगी और वे लगभग सामान्य जीवन जी सकेगी। उसके शरीर में इंसुलिन नहीं बनता। इंजेक्शन से इंसुलिन लेगी तो सब कुछ ठीक रहेगा।

वृद्धा : पर विवाह से मनाही क्यों?

वृद्ध : कहते हैं कि यह बीमारी अगली पीढ़ी को हो सकती है। इसलिए लड़के वाले मना कर रहे हैं। परंतु डॉक्टर साहब कह रहे थे कि बाल–मधुमेह अनुवांशिक नहीं होता।

वृद्धा : तो फिर क्या करें?

(मीना का प्रवेश)

मीना : आप दोनों चिन्ता न करें। मेरे से कोई लड़का मेरी बीमारी को जानते हुए भी विवाह करने को तैयार हो तो कोई मनाही नहीं। पर झूठ बोलकर, बीमारी को छिपाकर यदि मेरा विवाह किया गया तो गलत बात होगी। मैं नौकरी करके अपना जीवन गुजर–बसर कर लूँगी।

वृद्ध : मैं तो यह कहूँगा कि समाज में सबको यही पालन करना चाहिए। डायबिटीज़ को खत्म तो नहीं किया जा सकता पर उसे कन्ट्रोल में किया जा सकता है। ऐसे व्यक्ति पर जबर्दस्ती शादी नहीं थोंपना चाहिए। इसी में सबका भला है।

– डॉ. नरेंद्र नाथ लाहा
27, ललितपुर, कॉलोनी,
डॉ. पी.एन. लाहा मार्ग,
ग्वालियर – 474009 (म.प्र.)